अनुक्रमणिका

पृष्ठ संख्या

प्रथम अध्याय मृणाल पांडे : व्यक्तित्व एवं कृतित्व। 1 से 16

1.1 व्यक्ति परिचय।

1.1.1 जन्म तथा बचपन।

1.1.2 माता-पिता।

1.1.3 शिक्षा एवं शौक।

1.1.4 विवाह।

1.1.5 नौकरी ।

1.1.6 प्रेरणा।

1.1.7 पत्रकार तथा निवेदिका।

1.2 व्यक्तित्व।

1.2.1 प्रतिभा-संपन्न।

1.2.2 कार्यक्षम।

1.2.3 बहुभाषी।

1.2.4 कुशाग्र बुध्दिमत्ता।

1.2.5 आदर्श बेटी, पत्नी तथा माता।

1.2.6 युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत।

1.2.7 नारी की दयनीय दशा की ज्ञाता।

1.2.8 संपादिका एवं संस्थापिका

1.3 कृतित्व।

1.3.1 उपन्यास।

1.3.2 कहानी।

1.3.3 नाटक।

1.3.4 अन्य लेखन।

1.3.5 धारवाहिक।

1.3.6 रेडिओ।

1.3.7 सदस्यत्व।

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

1.3.8 प्राप्त पुरस्कार।

निष्कर्ष।

द्वितीय अध्याय - मृणाल पांडे की कहानियों का कथ्य। 17 से 48

2.1 प्रस्तावना

2.2 कहानीसंग्रह

2.2.1 यानी कि एक बात थी।

2.2.1.1 कोहरा और मछलियाँ।

2.2.1.2 चिमगादड़ें।

2.2.1.3 शरण्य की ओर।

2.2.1.4 धूँप-छाँह।

2.2.1.5 कैंसर।

2.2.1.6 रूबी।

2.2.1.7 लकीरे।

2.2.1.8 गर्मियाँ।

2.2.1.9 कगार पर।

2.2.1.10 कौवें।

2.2.1.11 दरम्यान।

2.2.1.12 दुर्घटना।

2.2.1.13 अँधेरे से अँधेरे तक।

2.2.1.14 दोपहर में मौत।

2.2.1.15 तुम और वह और वे।

2.2.1.16 यानी की एक बात थी।

2.2.1.17 खेल।

2.2.1.18 बर्फ।

2.2.1.19 मीटिंग।

तात्पर्य।

2.2.2 बचुली चौकीदारिन की कढ़ी।

2.2.2.1 पितृदाय।

2.2.2.2 प्रतिशोध।

2.2.2.3 एक नीच ट्रेजेड़ी।

2.2.2.4 एक स्त्री का विदागीत।

2.2.2.5 प्रेमचंद : जैसे कि मैंने उन्हें देखा।

2.2.2.6 लक्का-सुन्नी।

2.2.2.7 दूरियाँ।

2.2.2.8 हमसफर।

2.2.2.9 रिक्ति।

2.2.2.10 जगह मिलने पर साईड़ दी जाएगी उर्फ तीसरी दुनिया की प्रेमकहानी।

2.2.2.11 परियों का नाच ऐसा।

2.2.2.12 लेड़िज टेलर।

2.2.2.13 चार नंबरी सुनहरी बागलेन।

2.2.2.14 एक थी हँसमूख दे।

2.2.2.15 एक पगलाई सस्पेंस कथा।

2.2.2.16 बचुली चौकीदारिन की कढ़ी।

2.2.2.17 कर्कशा।

तात्पर्य।

2.2.3 चार दिन की जवानी तेरी।

2.2.3.1 लड़कियाँ।

2.2.3.2 उमेश जी।

2.2.3.3 हिर्दा मेयों का मँझला।

2.2.3.4 'मुन्नूचा' की अजीब कहानी।

2.2.3.5 बीज।

2.2.3.6 सुफारी फुआ।

2.2.3.7 अब्दुल्ला।

2.2.3.8 चार दिन की जवानी तेरी।

तात्पर्य।

SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR LIBRARY

2.3 निष्कर्ष।

तृतीय अध्याय – मृणाल पांडे की कहानियों
में वर्णित पारिवारिक समस्याएँ – 49 से 82

3 प्रस्तावना

3.1 परिवार का अर्थ और स्वरूप।

3.2 पारिवारिक समस्याएँ।

3.2.1 पारिवारिक विघटन की समस्या।

3.2.1.1 संयुक्त परिवार के विघटन की समस्या।

i. माता-पिता और संतान

ii. सास-बहू

iii. ननंद-भाभी

iv. जेठानी-देवरानी

3.2.1.2 केंद्रीय परिवार के विघटन की समस्या।

i. पिता-पुत्र

ii. माँ-बेटा

iii. माँ-बेटी

iv. भाई-बहन

v. बहन-बहन

vi. माता-पिता और संतान

3.2.1.3 दांपत्य संबंधों में विघटन की समस्या।

3.2.2 अकेलेपन की समस्या।

3.2.3 अविवाह की समस्या।

3.2.4 अर्थाभाव की समस्या।

3.3 निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय – मृणाल पांडे की कहानियों में
वर्णित नारी जीवन की समस्याएँ। 83 से 115

4.प्रस्तावना।

4.1 अविवाह।

4.2 अनमेल विवाह।

4.3 प्रेमविवाह।

4.4 स्त्री का विवाहपूर्व आकर्षण।

4.5 कुरूपता।

4.6 विधवा नारी की समस्या।

4.7 नारी का शोषण।

4.8 नारी की पराधीनता।

4.9 अकेलेपन की समस्या।

4.10 कामकाजी नारी की समस्या।

4.11 निष्कर्ष

पंचम अध्याय –मृणाल पांडे की कहानियों में
वर्णित सामाजिक समस्याएँ। 116 से 138

5.1 प्रस्तावना

5.2 कन्या–जन्म की समस्या।

5.3 तलाक।

5.4 बेरोजगारी की समस्या।

5.5 रिश्वतखोरी एवं भ्रष्टाचार की समस्या।

5.6 मँहगाई की समस्या।

5.7 सुविधाओं से वंचित पहाड़ी लोगों की समस्या।

5.8 पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव।

5.9 अंधविश्वास।

5.10 मृत्युसंबंधी विकृत प्रथा।

निष्कर्ष।

उपंसहार 139 से 144

संदर्भ ग्रंथ सूची 145 से 146

परिशिष्ट 147 से 150